Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 1, April-2020, ISSN 2230-7540

सरकारी और गैर सरकारी छात्र-छात्राओं का तकनीकि शिक्षा के प्रति रुझान

Poonam Bala[1]* Dr. Ram Prakash Saini[2]

[1] Research Scholar, Kalinga University, Raipur

[2] PhD Supervisor, Kalinga University, Raipur

***सार -** शिक्षा की गुणवता में सुधार में शिक्षकों का महत्वपूर्ण स्थान है, राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि है। शिक्षक की योग्यता, सूझबूझ कार्यक्षमता से ही भवन पाठ्यचर्या और उपकरणों का समुचित उपयोग कक्षाओं के अंदर हो सकता है। शिक्षक ही विद्यालय को प्राणवान बन सकता है। अध्यापक के प्रशिक्षण पर किए गए व्यय का प्रतिफल सचमुच काफी मूल्यवान है क्योंकि उसके परिणामस्वरूप लाखों छात्रों की शिक्षा में जितना सुधारात्मक व गुणात्मक परिवर्तन होगा शिक्षक की अभिक्षमता में भी उतनी ही वृद्धि होगी।*

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रस्ताव ने भी इस तथ्य को निम्नलिखित शब्दों में स्वीकार किया है। "शिक्षा की गुणवता तथा राष्ट्रीय विकास में योगदान को निर्धारित करने वाले घटकों में अध्यापक सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। उसका प्रभावशाली शिक्षण समाज में पारस्परिक स्नेह, मेलजोल तथा सद्भावना को बढा सकता है तथा एक आदर्श समाजवादी समाज का निर्माण कर सकता है।" शिक्षण न केवल शैक्षणिक विधियों का अध्ययन करने की एक प्रक्रिया है बल्कि यह देश की युवा शक्ति भावनाओं को सही दिशा में मोड़ सकती है। हमारे देश की वर्तमान आर्थिक व सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रभावी तथा अत्यन्त कुशल व योग्य अध्यापकों की नितांत आवश्यकता है जो हमारे राष्ट्र व समाज की भावी आशाओं, आकांक्षाओं तथा सपनों को साकार रूप दे सके। जो छात्रों को आत्मनिर्भर, उपयोगी तथा नए समाज निर्माण में योगदान देने वाले भावी नागरिक तैयार करेगा।

एक अच्छा शिक्षक बनने के लिए अध्यापक में जो गुण होने चाहिए वे गुण प्राप्त होते हैं। शिक्षकों की अच्छी शिक्षण-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम द्वारा। अतः अच्छे व गुणवान शिक्षक समाज को प्रदान करते हैं शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय। जिस प्रकार बालक के सर्वागींण विकास में एक अच्छे अध्यापक की भूमिका होती है। विद्यालय में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षक का सीधा संबंध छात्रों से होता है। शिक्षक बालकों के सर्वागीण विकास करने में सहायक होता है। वह छात्रों को प्रगति की राह दिखाने वाला पथ-प्रदर्शक होता है। शिक्षक न केवल कक्षा में अपितु विद्यालय में उचित वातावरण का निर्माण करता है।

शिक्षण

शिक्षण का अर्थ तर्कों सचूनाओं तथा विचारों को दूसरों तक पहुँचना मात्र है। शिक्षण तथ्यात्मकतथा व्याख्यात्मक ज्ञान का अध्यापक तथा छात्र के बीच आदान-प्रदान करता है। यह ज्ञान प्रदान करने कावह कौशल है जिसके द्वारा छात्र की रुचि को प्रेरित किया जाता है और आत्मसात कराया जाता है। शिक्षण शिक्षण कलाओं में कला है। यह एक प्रकार का आदान-प्रदान है जो दो या दो से अधिक व्यक्ति के मध्य होता है और वे एक दूसरे से कुछ सीखते है इसका सबंध् मुख्यतः स्कूलोंसे होता है जो कि एकऔपचारिक स्थिति है।

शिक्षण की परिभाषा

एच सी मोरिसन के अनुसार -शिक्षण व प्रक्रिया जिसमें अधिक विकसित व्यक्तित्व कम विकसित व्यक्तित्व के

www.ignited.in

सपंर्क में आता हैऔर कम विकसित व्यक्तित्व को अग्रिम शिक्षा के लिए विकसित व्यक्तित्व व्यवस्था करता है।

तकनीकी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

तकनीकी शिक्षा: तकनीकी शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों में विभिन्न कौशल विकसित होतें है, जिससे व्यावसायिक उत्पादकता में वृद्धि होती है और जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार होता हैं प्रस्तुत शोध में शोधकर्जी ने तकनीकी शिक्षा के अर्न्तगत अभियाँन्त्रिकी, प्रबन्धन और चिकित्सा को सम्मिलित किया है। जिनका विवरण निम्नवत् है

अभियॉन्त्रिकी- इंजीनियरिंग का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है एवं अवसर भी अधिक है। सिविल से लेकर इलैक्ट्रिक और कम्प्यूटर से लेकर एयरोस्पेस सभी क्षेत्रों में स्वर्णिम अवसर है।

चिकित्सा- चिकित्सा का कार्य क्षेत्र अत्यन्त विशाल है। आज चिकित्सा क्षेत्र में चयन होना अत्यन्त गर्व की बात मानी जाती है और समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। चिकित्सा विज्ञान एक जटिल विषय है, इसके कई रूप है-ऐलोपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेद, यूनानी आदि। आज के समय ऐलोपैथी आधुनिक चिकित्सा के क्षेत्र में सर्वाधिक सफल सिद्ध हो रही है। विभिन्न रूपों में जैसे- थैरेपी, शल्य चिकित्सा, हृदय रोग, त्वचा रोग नेत्र रोग और दंत रोग आदि के उपचार के रूप में सफल है।

प्रबन्धनः- प्रबन्धन की सबसे सरल परिभाषा काम करने की कला है। अर्थात बिजनेस मैनेजमेन्ट वह प्रकिया है, जिसमें काम करने वाले समूह दक्षतापूर्वक कार्य निष्पादित करते है। इसमें व्यक्तिगत प्रतिभा तथा प्रयास समूह की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। आधुनिकीकरण के कारण व्यवसाय की जटिलताएं बढ़ती जा रही है। प्रबन्धन कौशल एवं प्रशिक्षण का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

अभिवृत्तिः- ‘अभिवृत्ति किसी वस्तु या प्रक्रिया या व्यक्ति के प्रति सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही दृष्टि से विचार करना है।

अभिवृत्ति एक सामाजिक प्रत्यय एवं मानसिक पहलू है, इसका सम्बन्ध सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति व्यवहार के मानसिक पक्ष से होता है। अतः इसके माध्यम से व्यक्ति विशेष के व्यवहार का अध्ययन सम्भव होता है। इसलिए विभिन्न सामाजिक विज्ञानों, मनोविज्ञानों, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र में इनका महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। मनोविज्ञान ने अभिवृत्ति को बाहय व्यवहार का महत्वपूर्ण कारक माना है। अभिवृत्ति व्यक्ति के उस दृष्टिकोण की ओर इंगित करती है जिनके कारण वह किसी वस्तु परिस्थिति, संस्था या व्यक्ति के प्रति किसी विशिष्ट भांति का व्यवहार करता है।

सर्वप्रथम अभिवृत्ति शब्द का प्रयोग अमेरिका में गिडिंग्स द्वारा किया गया था। इसके उपरान्त अभिवृत्ति का परिचय सामाजिक मनोविज्ञान में विलियम मिस ने दिया है, इस प्रकार अभिवृत्ति को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अलग-अलग परिभाषित किया है।

आलपोर्ट के अनुसार- ‘अभिवृत्ति, प्रत्युत्तर देने की वह मानसिक और स्वाभाविक तत्परता से सम्बन्धित आस्था है जो अनुभवों के द्वारा संगठित होती है तथा जिसका व्यवहार पर गत्यात्मक या निर्देशात्मक प्रभाव पड़ता है।’

न्यूकाख के अनुसार- ‘अभिवृत्ति किसी व्यक्ति, वस्तु, पतन व मूल्य के प्रति एक विशिष्ट ढंग से अनुभव करने, क्रिया करने व व्यवहार करने की प्रवृत्ति है।

अतः अभिवृत्ति व्यवहार की वह क्रियायें है जिनका सम्बन्ध किसी न किसी लक्ष्य या उद्देश्य से होता है इसमें संवेगात्मक एवं प्रत्यक्षात्मक गुण निहित रहते हैं। अभिवृत्ति मनुष्य में स्थायी रूप से रहती है। अभिवृत्ति का क्षेत्र व्यापक होता है। अभिवृत्ति ज्ञानात्मक होती ही है तथा अभिवृत्ति का संबंध विचारों से अधिक होता है।

अभिवृत्ति एक व्यक्तिगत तत्व है जिसमें शीघ्रता से परिवर्तन सम्भव होता है। इनका आधार संवेगात्मक होता है। अभिवृत्ति के माध्यम से दूसरों के प्रति विचारों को व्यक्त किया जाता है। अभिवृत्ति उस व्यक्तित्व की ओर इंगित करती है। जो किसी व्यक्ति वस्तु संस्था अथवा प्रत्यय के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हैं।

दूसरे शब्दों में जहाँ अभिवृत्ति का सम्बन्ध व्यक्तित्व से है वही अभिवृत्ति मानसिक योग्यताओं पर भी बल देती है।

शैक्षिक अभिरुचि

व्यक्ति किसी वस्तु पर विशेष रूप से रुचि के कारण ही अवधान केन्द्रित करता है और इस प्रकार बालक की शिक्षा पर अवधान के साथ-साथ रुचि का महत्वपूर्ण स्थान है। रुचि किसी वस्तु से सम्बन्ध जोड़ने वाली मानसिक व्यवस्था है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु से अपना सम्बन्ध समझता है। इस प्रकार रुचि मानसिक क्रिया न होकर एक मानसिक व्यवस्था है इस मानसिक व्यवस्था का निर्माण अनुभव द्वारा होता है।

सेक्स के अनुसार- 'किसी अन्य कार्य की तुलना में एक कार्य को पसन्द करना ही अभिरुचि कहलाती है।

गिलफोर्ड के अनुसारः "रुचि किसी क्रिया, वस्तु या व्यक्ति पर ध्यान देने, उसके द्वारा आकर्षित होने, उसे पसन्द करने तथा उससे सन्तुष्टि पाने से होता है।

जो वस्तु बालक को अच्छी लगती है उसके प्रति उसमें रुचि हो जाती है, यह अनुभव मानसिक संस्कार के रूप में व्यवस्था का अंग बन जाता है। यह एक प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है जो हमें किसी वस्तु व्यक्ति या क्रिया की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है। रुचियाँ जन्मजात एवं अर्जित होती है।

व्यक्तित्व प्रकार -

व्यक्तित्व शब्द बहुत व्यापक है। इसके बारे में मनोवैज्ञानिकों में मतैक्य नही है तथापि इतना सत्य है कि व्यक्तित्व शब्द की लैटिन भाषा के PERSONA से हुआ है जिसका अर्थ है मुखौटा। जिसको एक कलाकार पहनकर नाटक या ड्रामा में विभिन्न भूमिकाओं को निभाता है।

अर्थात 'व्यक्तित्व कार्य करने की विद्यार्थी की विशिष्ट पद्वति है'। व्यक्तित्व में एक मनुष्य के न केवल शारीरिक और मानसिक गुणों का वरन् उनके सामाजिक गुणों का भी समावेश होता है, किन्तु इतने से ही व्यक्तित्व का अर्थ पूरा नहीं होता। कारण यह है कि यह तभी सम्भव है, जब एक समाज के सब सदस्यों के विचार संवेगों के अनुभव और सामाजिक क्रियायें एक सी हो। ऐसी दशा में व्यक्तित्व का प्रश्न ही नही रह जाता। इसीलिए मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि व्यक्तित्व मानव के गुणों, लक्षणों, क्षमताओं विशेषताओं आदि की संगठित ईकाई है।

आलपोर्ट के अनुसार- "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अद्वितीय समायोजन निर्धारित करता है।

वुडवर्थ के अनुसार - व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार की एक समग्र विशेषता है।

विग एण्ड हण्ट- व्यक्तित्व एक व्यक्ति के सम्पूर्ण के सम्पूर्ण व्यवहार प्रतिमान और इसकी विशेषताओं के योग का उल्लेख करता है।

ड्रेवर के अनुसार- व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग, व्यक्ति के शारीरिक मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है, जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान-प्रदान में व्यक्त करता है।' मनोवैज्ञानिक दृष्टि कोण से व्यक्तित्व के प्रकार मनोवैज्ञानिक ने मानसिक लक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व के निम्न प्रकार बताये है -

मनोवैज्ञानिक युग (Tung) में मानव प्रवृत्ति के आधार पर व्यक्तित्व के प्रमुख दो आधार बताये है -

1. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व - इस प्रकार का व्यक्तित्व उन व्यक्तियों का होता है। जिनका स्वभाव आदतें और गुण बाह्य रुप से प्रकट नही होते है। ये आत्म केन्द्रित होते है और सदा अपने में ही खोये रहते है।

2. बहिर्मुखी व्यक्तित्वः बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले बालकध्व्यक्तियों का स्वभाव, आदतें व गुण बाह्य रूप से प्रकट होते है। ये आत्म केन्द्रित नहीं होते और सदा बाह्य रुप के व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है।

गैर सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

1. महर्षि परमहंस कॉलेज ऑफ एजुकेशन, रामगढ़, झारखण्ड

2. डॉ. एस. राधाकृष्णन शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड

3. साईं नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

4. शाइन अब्दुर रज्जाक अंसारी शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, राँची, झारखण्ड

5. मोती राज देवी शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, राँची, झारखण्ड

सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

1. सरकारी महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, राँची, झारखण्ड

2. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

3. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

4. संत कोलम्बा महाविद्‌यालय, हजारीबाग, झारखण्ड

5. सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्‌यालय, हजारीबाग, झारखण्ड

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक विद्‌यालय के छात्रों के तकनीकी हित का अध्ययन करने के लिए तकनीकी शिक्षा हित सूची का निर्माण करना।

2. अपनी शैक्षिक धारा के संदर्भ में छात्रों के तकनीकी शिक्षा हित का अध्ययन करना।

साहित्य की समीक्षा

भटनागर (2013) ने यह शोध किया कि छात्राओं में व्यावसायिक अभिरूचि मुख्यरूप से उनके व्यवस्था को प्रेरित करने का एक साधन था। ये बातें उच्च पारिवारिक स्तर से सम्बन्धित छात्राओं में अधिक पायी गयी। छात्राएं पूर्ण रूप से व्यावसायिक विकल्प के चुनने के लिये स्वतंत्र थी। स्तर पर व्यावसायीकरण का अध्ययन गोखले ने (1984) में किया और पाया कि विभिन्न संस्थाओं में जाकर व्यावहारिक प्रशिक्षण लेना तथा स्थायी शिक्षकों द्‌वारा अध्यापन व्यावसायीकरण के पूर्ण ज्ञान देने में असफल था। शिक्षकों को अपने विषय में व्यावहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता थी तथा उनकी कार्य दशायें आकर्षक नहीं थी क्योंकि सरकार द्‌वारा दिया गया अनुदान उपयुक्त नहीं था इसलिए व्यावसायिक विषयों हेतु अच्छे शिक्षक जिन्हें पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त था उपलब्ध नहीं थे।

सी०ए०एस०ई० (2015) के अध्ययन ने स्पष्ट किया कि कर्नाटक में व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था अधिकांशतः शहरी क्षेत्रों में थी। इन पाठ्‌यक्रमों हेतु संस्थाओं में उपयुक्त सुविधायें नहीं थी। अधिकांश प्रधानाध्यापकों के पास कोई तकनीकी शिक्षा नहीं थी जिसके कारण वह इस प्रणाली का ठीक से संचालन कर सकें। अधिकांश शिक्षक तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त थे लेकिन कम वेतन और कार्य स्थिरता के अभाव में उनकों इस ओर आकर्षित नहीं किया जा सका। व्यावसायिक पाठ्‌यक्रम विस्तृत होने के कारण समय से पूर्ण नहीं किया जा सकता था। छात्रों को धनाभाव, यातायात के साधनों तथा शिक्षकों के सहयोग के अभाव में व्यावहारिक अनुभव नहीं प्रदान किया जा सका और कर्नाटक प्रदेश में इन पाठ्‌यक्रमों को पूर्ण करने वाले छात्रों को व्यवसायों में महत्व नहीं दिया गया।

एम० राय (2010) ने आन्ध्र प्रदेश में व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को लागू करने में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि राज्य में व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता तो है परन्तु न तो इन योजनाओं को लागू करने का कोई व्यवस्थित ढांचा है और न ही इन विद्‌यालयों में आवश्यक सुविधायें और स्थायी शिक्षक है। गुप्ता एवं डोक (1990) ने हिमाचल प्रदेश के माध्यमिक स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा लागू करने की केन्द्र प्रायोजित योजनाओं का मूल्यांकन किया। इस अध्ययन में स्पष्ट और वास्तविक रूप से कमियों का निर्वाह जैसे दोष का समय से निर्वाह न होना, प्रभावपूर्ण सामूहिक व्यवस्था न होना, पुस्तकों की अनुपस्थिति, कार्यरत प्रशिक्षण की सुविधा न होना, कच्चे माल की अनुपलब्धता, कार्य प्रशिक्षण और निर्देशानुसार कार्य करने की सुविधा आदि। इस अध्ययन में स्थिति को सुधारने के लिये विशेष सुझाव दिये गये है।

शाह और मिश्रा (2013) उत्तर प्रदेश में स्तर अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला कि विद्‌यार्थी तकनीकी रूप से परिपक्व और आत्मनिर्भर हो गये है। सरकार जो सुविधायें उपलब्ध करा रही है उसे तकनीकी दक्षता, परिपक्वता और आत्मनिर्भरता आंशिक रूप से प्राप्त होती है। राज्य में व्यावसायिक शिक्षा की खराब स्थिति के लिए पहले से तय की गयी रूपरेखा को स्थापित न कर पाना मुख्य कारण था।

सोहनी, बी. सोहनी, बी. (2017)- "शिक्षण अभ्यास के माध्यम से अध्यापकों की प्रभावशीलता के विकास का अध्ययन" इन्होंने अपने पी-एच.डी. स्तरीय अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किया- शिक्षण अभ्यास एवं अध्यापक प्रभावशीलता में सकारात्मक सह-सम्बन्ध है। अनुभवी समूह के अध्यापकों में अपने-अपने विषय के अध्यापन में प्रभावशीलता का स्तर उच्च पाया गया। अध्ययन के उपकरण की दृष्टि से अध्यापक प्रभावशीलता के 21 व्यवहारिक घटक निर्धारित कर 99 अध्यापकों की शिक्षण अभ्यासिकाओं को अवलोकित किया गया है।

उपसंहार

शिक्षक का स्थान सर्वोपरि है शिक्षक पाठ्‌यक्रम स्वरूप पथ पर अपने शिक्षार्थी का आगे बढ़ाने के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करता हैं तकनीकी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है, बालक के व्यक्तित्व एवं योग्यता पर शिक्षा का अधिक प्रभाव होता है, यदि अध्यापक सृजनशील एवं व्यक्तित्वशील है, तो वह स्वयं तकनीकी छात्रों की समस्याओं पर अधिक ध्यान देगा, और उनके व्यक्तित्व रूप से चिन्तन अर्न्तक्रियाओं को प्रोत्साहित

www.ignited.in

करेगा। ऐसी स्थिति में ऐसे शोध की आवश्यकता है। यदि बालक में बाल्यावस्था से लेकर युवावस्था तक तकनीकी शिक्षा विद्यमान रहती है, जो उनकी तकनीकी शिक्षा के विकास को अवरूद्ध कर सकते हैं, इस संदर्भ में नवीन अनुसंधान की नितान्त आवश्यकता है। जिससे इन कारकों के अतिरिक्त अन्य कारकों को ज्ञात करके, तकनीकी शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं को निवारित करके छात्रों में प्रारम्भ से ही उन्हें तकनीकी शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करके, उन्हे राष्ट्र के लिए अत्यधिक उपयोगी व सृजनशील, नागरिक के रूप में तैयार किया जा सके।

संदर्भ

1. अस्थाना, विपिन (1994) 'मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2 (उ.प्र.), पृष्ठ संख्या-53

2. अग्रवाल, ईश्वर प्रकाश (1996) 'बाल विकास एवं शैक्षिक क्रियाएं' आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-141, 146

3. अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सुदेश (2001) शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी 23, भगवान दास मार्केट, चैड़ा रास्ता, जयपुर, पृष्ठ संख्या-43

4. अहमद, मोहम्मद इकबाल (2006) 'इंडियन एज्यूकेशलन रिव्यू, टवस0.42, पृष्ठ संख्या - 12

5. अग्निहोत्री रविन्द्र (1999) 'आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं समस्या' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ संख्या - 45

6. भार्गव, उषा (1993) 'आधुनिक मनोविज्ञान, परीक्षण एवं मापन' द्वितीय संस्करण, भार्गव बुक हाऊस, राजा मण्डी, आगरा-2, पृष्ठ संख्या -24

7. भाई, योगेन्द्र जीत (1967) 'बाल मनोविज्ञान', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (नवीनतम संस्करण). पृ. सं. 86

8. भटनागर, सुरेश (1993) "अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार" इण्टरनेशलन पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ संख्या-128

9. भार्गव, महेश (1993) 'आधुनिक मनोविज्ञान, परीक्षण एवं मापन' द्वितीय संस्करण भार्गव बुक हाऊस, राजा मण्डी, आगरा-2, पृष्ठसंख्या -24 द्य 10.

10. भटनागर, सुरेशय वशिष्ठ कमलाय सिंह एम.के. (1996) "शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएँ सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, द्वितीयसंस्करण, पृष्ठ संख्या-38,39

Corresponding Author

Poonam Bala*

Research Scholar, Kalinga University, Raipur